

R.P. 22

व्यक्तित्व-भाषा-मीडिया एक अनुशीलन



डॉ. घनश्याम भारती





जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

कॉन्फेस प्रोसीडिंग पीयर-रिव्यूड, रिफर्ड बुक (पूर्व-समीक्षित, सान्दर्भिक पुस्तक)

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० कैलाश नारायण तिवारी, प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ० सुरेश आचार्य, प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर-४७०००३ (मध्यप्रदेश)

डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, इलाहाबाद

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग
के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१७

ISBN : 978-93-85833-76-2

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ७५०.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

VYAKTITWA-BHASHA-MEDIA : EK ANUSHILAN

Edited by Dr. Ghanshyam Bharti

१२. व्यक्तित्व संवर्द्धन में सम्प्रेषण कौशल	७४
डॉ० ए. के. जैन	
१३. व्यक्तित्व विकास और शिक्षा	७६
डॉ० सरोज गुप्ता	
१४. व्यक्तित्व विकास और मीडिया : भाषायी संदर्भ	८१
डॉ० रंजना मिश्रा	
१५. विश्व बाजार में हिन्दी	८८
डॉ० के.सी. जैन	
१६. मीडिया और संचार भाषा हिन्दी	९८
डॉ० कविता परस्ते	
१७. भाषा का पानी पानी आदमी का सपना	१०२
डॉ० लक्ष्मी पाण्डेय	
१८. व्यक्तित्व-संवर्द्धन और गुटनिरपेक्षता आंदोलन	११३
डॉ० शिखा चौबे	
१९. भाषायी- संवर्द्धन सौन्दर्य का प्रतीक चित्रकूट अभ्यारण्य	११८
डॉ० अरविन्द दीक्षित	
२०. समाज और व्यक्तित्व संवर्द्धन	१२३
डॉ० नीरज कुमार गौतम	
२१. हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग का भाषिक महत्त्व	१३२
डॉ० बिप्पू रजक	
२२. व्यक्तित्व का मनोविज्ञान	१३५
डॉ० नरेश कुमार नेमा	
२३. व्यक्तित्व-संवर्द्धन में सकारात्मक दृष्टि की भूमिका	१४२
सत्यप्रकाश तिवारी	
२४. भाषा-सम्प्रेषण और व्यक्तित्व	१४७
मंगलसिंह अहिरवार	
२५. सामाजिक परिवेश और पत्रकारिता	१५३
हरिश्चन्द्र यादव	

भाषा का पानी यानी आदमी का सत्

डॉ० लक्ष्मी पाण्डेय

भूमण्डलीकरण ने भाषा का पानी उतार दिया। 'पानी उतारना' एक मुहावरा है। इसका अर्थ समझना हो तो रहीम के इस दोहे का स्मरण करना होगा-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सूना।

पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चूना।

मोती के संदर्भ में 'पानी' आब है, चमक है जो उसे मूल्यवान बनाती है, मोती का पानी उतर जाए यानी चमक चली जाए तो उसका मूल्य, कीमत (सम्मान) घट जाता है। मानुष यानी मनुष्य के संदर्भ में पानी उसका सम्मान है, अस्तित्व की पहचान है। अस्मिता है। यह चला जाए तो उसका जीवन मुर्दा हो जाता है। चूना यानी चूना और आटा पानी के बगैर उपयोगी नहीं रह जाते। भाषा की चमक, उसका परिष्कृत, व्यवस्थित, अनुशासित रूप, उसकी अस्मिता अर्थात् भाषा का पानी . . .। 'पानी चढ़ाना' और 'पानी उतारना' यानी सम्मान और गौरव की वृद्धि करना, भाषा को परिष्कृत कर उसकी चमक को बढ़ाना 'पानी चढ़ाना' हुआ, वहीं भाषा को विकृत करना उसका 'पानी उतारना' कहा जाएगा।

'पानी चढ़ाने' और 'पानी उतारने' की प्रक्रिया के केन्द्र में है मनुष्य . . .। मनुष्य भाषा का धारक है। अपने अनुभव और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए ब्रह्मा ने उसे वाणी का वरदान दिया। उपनिषद् (छांदोग्य उपनिषद्) में